CHAPTER - 16
पतझर में टूटी पत्तियाँ
प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:
शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है ?

उत्तर 1:
शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। जैसे सोना अपनी चमक नहीं खोता वैसे ही आदर्शवादी लोग अपने आदर्शों से समझौता नही करते और व्यावहारिक लोग ताँबे की तरह होते हैं । वे अपने आदर्शों रूपी सोने में ताँबा भी मिला लेते हैं ।

प्रश्न 2:
चाजीन ने कौन–सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं ?

उत्तर 2:
चाजीन ने दो... झो...; आइए, तशरीफ लाइए कहकर स्वागत किया। बैठने की जगह लेखक को दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे में जाकर कुछ बरतन ले आया। तौलिए से बरतन साफ किए। सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं कि लेखक देखता रह गया।

प्रश्न 3:
'टी–सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर 3:
टी सेरेमनी में केवल ज्यादा से ज्यादा तीन लोगों को ही प्रवेश दिया जाता है । वहाँ लेखक को मिलाकर भी तीन मित्र ही थे क्योंकि इस विधि में शांति मुख्य बात होती है। इसलिए वहाँ तीन से अधिक आदमियों को प्रवेश नहीं दिया जाता।

प्रश्न 4:
चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर 4:
चाय पीते–पीते उस दिन लेखक के दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था। और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था। जीना किसे कहते हैं, लेखक को उस दिन मालूम हुआ।

खंड – ख

प्रश्न 1:
गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर 1
गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर लाकर रख देते थे । इसीलिए लोग उनेक भक्त थे क्योंकि वे कथनी और करनी में फर्क नहीं करते थे इसी कारण उनके अन्दर नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी।

प्रश्न 2:
आपके विचार से कौन–से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं ? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2:
वर्तमान समय में भी सत्य का आचरण , दूसरों को धोखा न देना , दूसरे पर परोपकार करना , दूसरों के सुख–दुख में भागीदार होना आदि ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं और इनहीं के बल पर आज भी धर्म और ईमान हमारे समाज में टिका हुआ है।

प्रश्न 3:
अपने जीवन की किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जब शुद्ध आदर्श से आपको हानि–लाभ हुआ हो। शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ हो।

उत्तर 3:
समाज में लोग आदर्शों की बाते बढ़–चढ़ कर करते हैं लेकिन जब उनको व्यवहार में लाने का समय आता है तो अपने आदर्शों से पीछे हट जाते हैं ऐ समय की बात हैं मैंने देखा कि बैंक में लोग नोट बदलवाने के लिए लाइन में लगे हुए थे , एक सज्जन आए और बिना लाइन के अन्दर चले गए लाइन में खड़े सभी लोगों ने विरोध कि एक सज्जन तो बड़े–बड़े आदर्शों की बातें करने लगे और लोगों को नसीहत देने लगे और थोड़ी ही देर में वे सज्जन भी जुगाड़ लगाकर अन्दर चले गए ।

प्रश्न 4:
शद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 4:
जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे–धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है। सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है। कुछ लोग कहते हैं, गांधीजी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसीलिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके।

प्रश्न 5:

'गिरगिट' कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल–पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्त्व है?

उत्तर 5:

जिस प्रकार गिरगिट कहानी में समय के अनुसार कहानी में परिवर्तन आता है ठीक उसी प्रकार आदर्शवादिता और व्यवहार दोनों ही समय के अनुरूप ऊपर नीचे आते रहते हैं । दोनों का ही समाज में बराबर का स्थान है । आज के समय में व्यावहारिकता को ही पूजा जाता है । आप कितने ही आदर्शवादी क्यों न हो अगर आपके आदर्शों से समाज का नुकसान हो रहा है तो आपके आदर्श समाज के लिए बेकार हैं ।

खंड – ग

आशय स्पष्ट कीजिए

1.

समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

उत्तर 1:

आज के इस कुव्यवस्थित समज में अगर कुछ संस्कार बचे हुए हैं तो वे केवल आदर्शवादी लोगों द्वारा ही दिए गए हैं । उन्हीं के बल पर कुछ आत्मीयता और इंसानियत बची हुई है।

2.

जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे–धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ–बूझ ही आगे आने लगती है।

उत्तर 2:

आज के समाज में बखान केवल आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे–धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है। सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।

3.

हमारे जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

उत्तर 3:

आज की इस भाग–दौड़ भरी ज़िंदगी में हर कोई आगे निकलना चाहता है आज के समय में किसी के पास किसी के लिए समय नहीं है । सभी के अन्दर एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है । आज के समय में कोई चलता नहीं दौड़ता है , बोलता नहीं बड़बड़ाता है क्योंकि उसके पास समय नही है । आज का मनुष्य महीने भर का काम दिन भर में और दिन भर का काम पल भर में करना चाहता है । इसी कारण वह मानसिक रोगों का शिकार हो गया है ।

4.

सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।

उत्तर 4:

जापान में लेखक जहाँ चाय पीने गया था वहाँ का वातावरण बड़ा ही शांत था । वहाँ एक अजीब सी खामोशी थी । ऐसा लग रहा था कि वह किसी और दुनिया में आ गया है । पानी के खौलने की आवाज तक का सुनाई देना इस बात को दर्शाता था कि वहाँ का वातावरण कितना शांत है । चाय बनने से पीने तक उसको ऐसा लगा मानो उसके कानों में कोई मंद संगीत गूँज रहा हों ।